बी० ए० द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न-पत्र

— डॉ० कृष्ण शंकर यादव

प्लेटो (427 B.C - 347 B.C)

→ राजनीति दर्शन को वैज्ञानिक और तर्कसम्मत रूप प्रदान किया।

→ "प्लेटो में सुकरात पुनः जीवित हो गया है" (In Plato Socrates lived again) - मैक्सी

→ प्लेटो की 'Academy' को यूरोप का प्रथम विश्वविद्यालय कहा जा सकता है।

→ प्लेटो के सभी ग्रंथ संवाद (Dialogues) शैली में लिखे गये हैं। राजनीतिक चिन्तन की दृष्टि से प्रमुख ग्रंथ — ① रिपब्लिक ② स्टेट्समैन ③ लॉज

→ दार्शनिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन में निगमन पद्धति (दार्शनिक पद्धति) का प्रयोग। सामान्य से विशिष्ट की ओर चलने वाली पद्धति।

→ सद्गुण ही ज्ञान है। (Virtue is Knowledge) (सुकरात)

प्लेटो का न्याय सिद्धान्त

① → परम्परागत सिद्धान्त :- सेफलस — "सत्य बोलना और दूसरों के ऋण को चुका देना ही न्याय है।"
पोलीमार्कस :- "प्रत्येक व्यक्ति को उसके योग्य उचित व्यवहार देना ही न्याय है।"

② → व्यवहारवादी सिद्धान्त :- न्याय भय की सन्तान है तथा यह दुर्बलों की आवश्यकता है। (ग्लाकन)

③ → उग्रवादी सिद्धान्त :- "न्याय शक्तिशाली का हित है।" — थ्रेसीमेकस

⇒ प्लेटो की न्याय सम्बन्धी धारणा — उपरोक्त तीनों मान्यताओं को प्लेटो अस्वीकार कर देता है।

→ व्यक्ति का वृहद रूप राज्य है।

व्यक्ति के गुण — बुद्धि, साहस, तृष्णा → राज्य के गुण — शासक वर्ग, सैनिक वर्ग, उत्पादक वर्ग

- प्रत्येक व्यक्ति अपने गुण के अनुसार कार्य करे तथा दूसरे में हस्तक्षेप न करें। इसी प्रकार राज्य का प्रत्येक वर्ग अपनी गुण एवं क्षमता के अनुसार कार्य करे तथा हस्तक्षेप न करें यही न्याय है।

बी०ए० द्वितीय वर्ष

प्रथम प्रश्न-पत्र प्लेटो का शिक्षा सिद्धान्त

→ रिपब्लिक शिक्षा पर लिखा गया आज तक का सर्वोत्तम ग्रंथ है। (ठसो)

→ प्लेटो की शिक्षा का उद्देश्य मानव आत्मा को प्रकाशोन्मुख करना है। (नैटलशिप)

→ एथेन्स की शिक्षा प्रणाली – प्रत्येक परिवार का निजी कार्य, राज्य हस्तक्षेप नहीं।

→ स्पार्टा की शिक्षा प्रणाली – पूर्णतया राज्य द्वारा नियंत्रित, 7 वर्ष की आयु के बच्चों को परिवार से ले लिया जाता एवं सम्पूर्ण शिक्षा की व्यवस्था राज्य करता था।

⇒ प्लेटो का शिक्षा दर्शन – मनुष्य के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना
– सत् के विचार (The Idea of the Good) से साक्षात्कार करना।

→ शिक्षा योजना :- प्रारम्भिक शिक्षा – जन्म से 6 वर्ष तक – धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा
– 6 से 18 वर्ष तक – व्यायाम तथा संगीत शिक्षा
– 18 से 20 वर्ष तक – कठोर सैनिक प्रशिक्षण

उच्च शिक्षा – 20 वर्ष की आयु तक प्रारम्भिक शिक्षा के बाद परीक्षा लेने की व्यवस्था। उत्तीर्ण बालकों को उच्च शिक्षा तथा अनुत्तीर्ण बच्चे युवक उत्पादक वर्ग – कृषक, मजदूर, व्यापारी, शिल्पी आदि का कार्य करेंगे।

– 20 से 30 वर्ष तक – गणित, रेखा-गणित, ज्योतिष एवं संगीत शिक्षा। 30 वर्ष के बाद पुनः परीक्षा एवं उत्तीर्ण करने वाले पूर्ण शिक्षक के योग्य शिक्षा
– 30–35 वर्ष तक – दर्शन शास्त्र की शिक्षा।
– 35–50 वर्ष तक – व्यावहारिक शिक्षा का प्रशिक्षण।
– 50 वर्ष की आयु तक कठोर सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात ही संरक्षक लोग शासक (दार्शनिक शासक) बनने के योग्य माने जायेंगे।